STUDY OF ROLE OF MODERN TECHNOLOGICAL INPUTS IN THE DEVELOPMENT OF AGRICULTURE IN RAJDANDA VILLAGE OF MAHUADANR (CHECHARI VALLEY) AN ANALYSIS

A DISSERTATION SUBMITTED TO ST. XAVIER'S COLLEGE MAHUADANR

AFFILIATED TO NILAMBER PITAMBER UNIVERSITY

BACHELOR OF ARTS

BY

GROUP -G

Miss PUJA HURHURIA (Reg No.- NPU2020013234)

Miss PRATIBHA NAGESIA (Reg No.- NPU2020013217)

Mr. SHASHIKANT KUMAR VERMA (Reg No.- NPU2020013286)

Miss PINKI KUMARI (Reg No.- NPU2020013161)

Miss DIVYA TIGGA (Reg No.- NPU2020013167)

Under the guidance of

Asst. Prof. SHEPHALI PRAKASH

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

ST. XAVIER'S COLLEGE MAHUADANR

Nationally Accredited with Grade 'B' (NAAC)

MAHUADANR (822119), LATEHAR JHARKHAND

CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation entitled **"Role Of Modern Technological Inputs In The Development Of Agriculture In Rajdanda Village Of Mahuadanr (Chechari Valley) An Analysis"** submitted to **St. Xavier's College Mahuadanr** in partial fulfillment of requirement for the award of Bachelor of Arts in Geography to awarded by the **University of Nilamber Pitamber** is a bonafied record of the work carried out by

Miss PUJA HURHURIA (Reg No.- NPU2020013234) Puja Hurhuria

Miss PRATIBHA NAGESIA (Reg No.- NPU2020013217) Pratibha Nagesia

Mr. SHASHIKANT KUMAR VERMA (Reg No.- NPU2020013286) Shashikant Kr Verma

Miss PINKI KUMARI (Reg No.- NPU2020013161) Pinki Kumari

Miss DIVYA TIGGA (Reg No.- NPU2020013167) Divya Tigga

ASST. PROF. SHEPHALI PRAKASH
Head of the Department,
Department of Geography
St. Xavier's College Mahuadanr,
Latehar – 822119, Jharkhand

Head of the Department
Dept. of Geography
St. Xavier's College, Mahudanr
Latehar, Jharkhand - 822119

ASSISTANT PROF.
SHEPHALI PRAKASH
Dissertation Guide
St. Xavier's College Mahuadanr
Latehar – 822119, Jharkhand

ACKNOWLEDGEMENT

First of all We praise and thank the **ALMIGHTY GOD** from the depth of heart for showering his grace, love and blessing to make this Endeavor possible.

We are profoundly thankful to my beloved principal, **Fr. MK Joseph SJ** for allowing me to study the under graduate course in this historical institution.

we thank **Miss. Shephali Prakash, Head of the Department of Geography,** St. Xavier's College Mahudanr – 822119 , for allowing me to take this dissertation and for permission to use the lab and the instruments available in the department.

Assistant Prof. Miss. Shephali Prakash (MA NET) was my guide for this dissertation. We are extremely grateful for her inspiring guidance, useful discussions and encouragement throughout the dissertation and whose meticulous and patient guidance has enriched me personally and intellectually.

We express my heartfelt thanks to all my fellow student who encouraged me to finish this dissertation successfully.

Puja Hurhuria — **Miss PUJA HURHURIA**

Pratibha Nagesia — **Miss PRATIBHA NAGESIA**

Shashikant Kr. Verma — **Mr. SHASHIKANT KUMAR VERMA**

Pinki Kumari — **Miss PINKI KUMARI**

Divya Tigga — **Miss DIVYA TIGGA**

विषय सूची

S.No.	विषय	पृष्ठ संख्या	हस्ताक्षर
1	प्रमाण पत्र		
2	स्वीकृति पत्र		
3	तालिका सूची		
4	भूगोल का परिचय	1.	
5	टेक्नोलॉजी का परिचय	2-5	
	कृषि यंत्रीकरण की परिभाषा		
	लाभ		
	हानि		
6	भारत देश का वर्णन	6	
7	झारखंड राज्य का वर्णन	7.	
8	टेक्नोलॉजी -	8-12	
	समस्या		
	यंत्रीकरण का उद्देश्य		
	ट्रैक्टर		
	हैप्पी सीडर		
	मिट्टी पलट हल		
	क्रॉप कटर मशीन		
9	किसानों की सामाजिक स्थित	13-15	
	भूमि का अधिकार		

निष्कर्ष:-

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि किसी भी क्षेत्र में जनसंख्या एवं कृषि का बहुत अहम हिस्सा होता है ठीक उसी प्रकार महुआडांड़ में अधिकांश लोग कृषि कार्य में संलग्न है। क्योंकि महुआडांड़ पठारी इलाका है यह सूखा जिला के अंतर्गत आता है पानी की कमी एवं सिंचाई के साधनों का अभाव है यहां की मिट्टी कठोर है तथा यहां शिक्षा का अभाव पाया जाता है।

कृषि भारत का भविष्य है कृषि केवल किसानों की ही रोजी-रोटी नहीं है बल्कि खेतों में काम करने वाले करोड़ों मजदूरों को रोजगार प्रदान करता है।

महुआडाँड प्रखंड में बहुत लोगों के पास जमीन होते हुए भी वे कृषि नहीं कर पाते हैं क्योंकि वहां के लोगों के पास पूंजी का भाव उन्नत किस्म के बीजों की कमी इत्यादि देखा गया है तथा कुछ लोगों के पास जमीन के अभाव के कारण भी वे कृषि करने में असक्षम हैं।

कृषि कर्म करने वाला ही कृषक कहलाता है। खेती संसार का सबसे पुराना व्यवसाय है। यह मनुष्य के सभ्यता की ओर उन्मुख होने का प्रथम चरण है। भारत गाँवों में बसता है, कहने का यही अर्थ है कि भारत की बहुसंख्यक जनता किसान है और किसान गाँवों में ही रहते हैं। भारतमाता ग्रामवासिनी' कहकर कवि पंत ने इसी तथ्य ओर संकेत किया है। किसान भारत की पहचान है।

किसान समस्त संसार का अन्नदाता है। वह अपने खेतों में जो अन्न उगाता है, उससे ही संसार का पेट भरता है। खाद्यान्न ही नहीं वह अन्य वस्तुएँ भी अपने खेतों में पैदा करता है। वह कपास उगाता है, जो लोगों के तन ढकने के लिए वस्त्र बनाने के काम आती है।

वह गन्ना पैदा करता है जो गुड़ और शक्कर के रूप में लोगों को मधुरता देता है। वह तिल, सरसों, अलसी आदि तिलहन पैदा करता है जो मनुष्य की अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन है। किसान साग-सब्जी, फल इत्यादि काकरके लोगों की आवश्यकताएँ पूरी करता है।